AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

èkeZ'kkyk dk vkfFkZd fodkl esa i;ZVu dh Hkfedk ,d lekt'kkL=h; vè;;u

ORIGINAL ARTICLE

Authors

jÇoæ dqekj

शोधार्थी, समाज कार्य विभाग
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय,
कांगड़ा, हिमाचल प्रदेश, भारत

M,- vcjhu tekyh

सहायक आचार्य, सामाजिक कार्य विभाग
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय,
कांगड़ा, हिमाचल प्रदेश, भारत

'kks/k lkj

धर्मशाला एक बहुत सुंदर रमणीय स्थल है जिसको भारत का स्कॉटलैंड के रुप में जाना जाता है। धर्मशाला काँगड़ा जिले का मुख्यालय है, यह अंग्रेजों द्वारा स्थापित 80 पर्वतीय स्थानों में से एक है। धर्मशाला एक व्यस्त व्यापारिक केंद्र है। यह रमणीय स्थल धौलाधार पर्वत श्रृंखलाओं के बीच में है और इसकी हिमरेखा अन्य पर्वतीय सैरगाहो की तुलना में आसानी से पहुंचने वाली है। आज धर्मशाला पुरे विश्व में परम पावन दलाईलामा का मुख्यालय होने के कारण विख्यात है। धर्मशाला को 'भारत का लघु ल्हासा' भी कहा जाता है। धर्मशाला में कई पर्यटन स्थल है जहाँ घुमने के लिए स्थान है। इस अध्ययन में 50 लोगो को प्रतिदर्शन बनाया है जिसमे यादृच्छिक प्रतिदर्श को प्रयोग में लाया गया जिसमे अनुसंधानकर्ता सुविधा से प्रत्याशियो को चुनते है। इस अध्ययन में यह निकल कर आया है कि धर्मशाला में पर्यटन के कारण धर्मशाला का आर्थिक विकास हुआ है साथ ही नए बुनियादी ढांचे का भी विकास हो रहा है और लोगो के खान–पान में वैश्वीकरण के कारण काफी परिवर्तन आया है।

eq[; 'kCn

आर्थिक, पर्यटन, विकास, वैश्वीकरण.

Hkfedk

पर्यटन एक ऐसी यात्रा है जो मनोरंजन या फुरसत के क्षणों का आनंद उठाने के उद्देश्य से की जाती है। विश्व पर्यटन संगठन के अनुसार, "पर्यटक वे लोग है जो यात्रा करने अपने सामान्य वातावरण से बाहर के स्थानों में रहने जाते है। ये समय ज्यादा से ज्यादा एक साल के मनोरंजन, व्यापार, अन्य उद्देश्यों से किया जाया जाता है। ये उस स्थान पर किसी खास क्रिया से सम्बंधित नही होता। पर्यटन दुनियाभर में एक आरामपूर्ण गतिविधि के रुप में लोकप्रिय हो गया है। 2007 में 903 मिलियन से अधिक अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों के आगमन के साथ ,2006 की तुलना में 6.6 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई। 2007 में अंतर्राष्ट्रीय पर्यटक प्राप्तियाँ 846 अरब थी। कई देशो जैसे थाईलैंड और कई द्वीप राष्ट्रों जैसे फिजी के लिए पर्यटन बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि अपने माल और सेवाओ के व्यापार से ये देश बहुत अधिक मात्रा में धन प्राप्त करते है और सेवा उद्योग में रोजगार के अवसर पर्यटन से जुड़े है।

bfrgkl

धनी लोगो ने हमेशा दुनिया की बड़ी इमारतों और कलाकृतियों को देखने के लिए दुनिया के दूर–दूर के क्षेत्रो की यात्रा की है। ऐसा वे कई भाषा जानने, संस्कृतियों का अनुभव करने के लिए और नए और अलग स्वाद के व्यंजनों को चखने के लिए करते आये थे।

पर्यटन शब्द का प्रयोग 1811 में किया गया था और पर्यटक का 1936 में लीग ऑफ़ नेशन्स ने विदेशी पर्यटकों को ऐसे रुप में परिभाषित किया जो कम से कम चौबीस घंटे के लिए विदेश यात्रा करते है। उत्तराधिकारी संयुक्त राष्ट्र ने इस परिभाषा में 1945 में संशोधन किया और उसमे अधिकतर 6 माह को प्रवास शामिल कर दिया है।

io ch loË 'krkCnh

ऐसा कहा जाता है कि यूरोपीय पर्यटन ने मध्ययुगीन तीर्थयात्रा को आरंभ किया था। यद्यपि कहानियों में बताया गया है की तीर्थयात्री प्रारभिक रुप से धार्मिक कारणों से यात्रा पर जाते थे फिर भी इसे अवकाश माना गया था। 17वीं शताब्दी के दौरान, इंग्लैंड में एक बड़ी यात्रा पर जाना फैशन बन गया। कुलीन और भद्र लोगो के पुत्र शैक्षणिक अनुभव के लिए यूरोप के दौरे पर भेजे जाते थे। 18वी शताब्दी बड़ी यात्रा के लिए स्वर्ण युग था।

भारतीय प्राचीन ग्रंथों में स्पष्ट रुप से मानव के विकास, सुख–शांति की संतुष्टि व ज्ञान के लिए पर्यटन को अति आवश्यक माना गया है। हमारे देश के ऋषि मुनियों ने भी पर्यटन को प्रथम महत्व दिया है। प्राचीन गुरुओ ने भी यह कहा है कि ''बिना पर्यटन मानव अंधकार प्रेमी हो कर रह जायेगा।''

i;Vu dk çdkj

पर्यटन कई तरह का होता है लेकिन मुख्यतः पर्यटन को दो भागों में बांटा गया हैः

1. अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटकः (अ) बाहरी पर्यटक (ब) आंतरिक पर्यटक।
2. घरेलू पर्यटक।

vUrjk"Vªh; i;Vd

जब देश के लोग बाहर के देश में जाते है उसे अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटक कहा जाता है। जब बाहर के देश में यात्रा करते है तो आपको वैध पासपोर्ट, वीजा, स्वास्थ्य दस्तावेज, विदेश की पूंजी महत्वपूर्ण होती है। अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटक को दो भागो में बांटा गया हैः

(अ) **ckgjh i;Vd%** यह किसी विशेष देश में प्रवेश करने वाले बाहरी मूल के पर्यटकों को संदर्भित करता है। जब लोग अपने मूल देश से बाहर किसी अन्य देश में जाते है तो उसे उस देश का बाहरी पर्यटक कहा जाता है। उदाहरण के लिए जब भारतीय मूल का कोई पर्यटक जापान जाता है तो वह जापान के लिए बाहरी पर्यटक होता है।

(ब) **vkrfjd i;Vd%** यह उनके मूल देश से दुसरे देश जाने बाले पर्यटकों को संदर्भित करता है। जब पर्यटक किसी विदेशी क्षेत्र में की यात्रा करते है तो वह अपने देश के लिए बाहर का पर्यटन होता है क्योंकि वह अपने देश से बाहर जा रहा होता है। उदाहरण के लिए जब भारत से एक पर्यटक जापान की यात्रा करता है तो वह भारत के लिए आंतरिक पर्यटक व जापान के लिए बाहरी पर्यटक होता है।

?kjsy i;Vu

अपने देश के भीतर लोगों की पर्यटन गतिविधी को घरेलू पर्यटन के रुप में जाना जाता है। एक ही देश के भीतर यात्रा करना आसान है, क्योंकि इसमें औपचारिक यात्रा दस्तावेजो और थकाऊ औपचारिकताएँ जैसे अनिवार्य स्वास्थ्य जाँच और विदेशी मुद्रा की आवश्यकता नही होती है। घरेलू पर्यटन में एक यात्री के आमतौर पर भाषा की समस्याओं या मुद्रा विनिमय के मुद्दों का सामना नही करना पड़ता है।

i;Vu dk n’k d vkFkd fodkl e ;kxnku

पर्यटन क्षेत्र देश की आर्थिक समृद्धि और रोजगार सृजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। पर्यटन देश का वृहद सेवा उद्योग है। यह एक महत्वपूर्ण सेवा उन्मुखी क्षेत्रक है जो सकल राजस्व और विदेशी मुद्रा के अर्जन की दृष्टि से त्वरित विकास करता है। यह सेवा प्रदाताओं का सम्मिश्रण है। सरकारी और निजी दोनों ही इसमें संयुक्त सेना है जिसमे यात्रा एजेंट और संचालक, हवाई, भू और समुद्री परिवहन, गाइड, होटलों के मालिक, अतिथि गृह, रेस्तरां और दुकाने शामिल है। पर्यटन किसी भी देश में रहने वाले लोगों के जीवन स्तर तथा रहन–सहन की स्थिति में महत्वपूर्ण सुधार लाये जाने के साथ ही रोजगार सृजन का भी महत्वपूर्ण कार्य करता है। पर्यटन से स्थानीय कर प्राप्तियों के रुप में अर्थव्यवस्था को जो प्राप्त होता है उससे सामाजिक निर्धनता उन्मूलन, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा, आवास, पेयजल तथा स्वच्छता, मनोरंजन के अवसरों आदि आधारभूत सेवाओं की व्यवस्थाओं को वास्तविकता में साकार किया जा सकता है। आज के समय में जहाँ हर देश की पहली जरूरत अर्थव्यवस्था को मजबूत करना है वही आज पर्यटन के कारण कई देशों की अर्थव्यवस्था पर्यटन उद्योग के इर्द–गिर्द घुमती है। यूरोपीय देश, तटीय अफ्रीकी देश, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया आदि ऐसे देश है, जहाँ पर्यटन उद्योग से प्राप्त आय वहाँ की अर्थव्यवस्था को मजबूत करती है। इसी तरह हमारे देश भारत की भी कहीं ना कहीं पर्यटन से आर्थिक विकास, अर्थव्यवस्था को मजबूती मिलती है।

èkeZ’kkyk d i;Vu LFky

;) Lekjd युद्ध स्मारक धर्मशाला का एक लोकप्रिय पर्यटन स्थल है, जो शहर के प्रवेश द्वार पर स्थित है जिसकी स्थापना हिमाचल प्रद्रेश के उन सैनिको की याद में की गई जिन्होंने आजादी के बाद भारत के लिए लड़ाई लड़ी। इस स्मारक की दीवारों पर नक्काशी की गई है और ये शिलालेख प्रदर्शित करती है। धर्मशाला में जो कोई भी पर्यटन आता है तो वह इस जगह जरुर जाता है क्योंकि यह युद्ध स्मारक सैनिकों के बलिदान को दर्शाता है साथ ही यह ऐसे बनाया गया है जैसे की यह सच में एक युद्ध स्थल हो जहाँ पर सैनिक ही सैनिक देखने को मिलते है।

dukuky iFkjh efnj धौलाधार की पहाडियों की मनोरम छठा में चाय बागानों के बीच स्थित मां कुनाल पत्थरी मंदिर कपालेश्वरी के नाम भी विख्यात है। मां कपालेश्वरी देवी मंदिर अनूठा और विशेष भी है। यहां पर मां के कपाल के ऊपर एक बड़ा पत्थर भी कुनाल की तरह विराजमान है इसलिए इस मंदिर को मां कुनाल पत्थरी के नाम से भी जाना जाता है

eDykMxt भारत के राज्य हिमाचल प्रदेश के काँगड़ा जिले में स्थित कस्बे धर्मशाला का एक उपनगर है। तिब्बतियों के लोगों की एक बड़ी आबादी के कारण इसे छोटा ”ल्हासा“ के नाम से जाना जाता है। तिब्बत की निर्वासन सरकार का मुख्यालय भी मैक्लोडगंज में स्थित है। मैक्लोडगंज का नाम सर डोनाल्ड फ्रील मैक्लोड़ जो की पंजाब के लेफ्टिनेंट गवर्नर थे के नाम पर रखा गया।

HkkXl ukx भाग्सू नाग मंदिर एक प्रमुख धार्मिक केंद, समुद्र तल से 1770 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। हिन्दू भगवान शिव को समर्पित, मंदिर मध्ययुगीन काल की कला और संस्कृति दर्शाता है। यह प्राचीन मंदिर हिन्दू और गोरखा समुदायों द्वारा पवित्र माना जाता है। मंदिर के परिसर के भीतर सुन्दर तालाब है।

uìh नड्डी धर्मशाला शहर का एक गाँव है जो की मैक्लोडगंज से 3 किलोमीटर की दुरी पर है। इसमे ऐसे स्थल है जो घुमने के लायक है जिसमे की नड्डी गाँव का दृश्य और साथ में अम्मा ध्यान केन्द्र है जहाँ लोग ध्यान करने जाते है। नड्डी काफी प्रसिद्ध है, दुनिया भर से यहाँ पर्यटक आते है।

èkedkV धर्मकोट, धर्मशाला शहर के साथ लगता हुआ एक छोटा सा गाँव है। धर्मकोट में देश–विदेश से लोग घुमने आते है। इसको मिनी इजरायल के नाम से भी जाना जाता है क्योंकि काफी मात्रा में यहाँ आपको बाहर के व्यक्ति मिल जायेंगे। यह एक बहुत ही सुन्दर हिल स्टेशन है, इसकी तारीफ हमे दूर–दूर सुनने को मिलती है।

pkeMk noh efnj हिमाचल प्रदेश को देवभूमि भी कहा जाता है, इसे देवताओं के घर के रुप में जाना

जाता है। पुरे हिमाचल प्रदेश में 2000 से भी ज्यादा मंदिर है और इसमे ज्यादातर प्रमुख आकर्षक का केंद्र बने हुए है। इन मंदिरों में से एक प्रमुख मंदिर चामुंडा देवी का मंदिर है जो कि जिला काँगड़ा में है। चामुंडा देवी मंदिर शक्ति के 51 शक्ति पीठों में से एक है, यह धर्मशाला से 15 कि. मी. की दुरी पर है। यहाँ प्रकृति ने अपनी सुन्दरता भरपूर मात्रा में प्रदान की है। चामुंडा देवी मंदिर बंकर नदी के किनारे बसा हुआ है। चामुंडा देवी मंदिर मुख्यतः काली माता को समर्पित है।

’kkèk mís’;

किसी भी शोध करने से पहले उसके उद्देश्य को देखना होता है की इस शोध को करने का मुख्य उद्देश्य क्या है इस शोध के मुख्य बिंदु इस प्रकार से हैः

1. पर्यटन और स्थानीय रोजगार के बीच सम्बन्ध का विश्लेषण।
2. धर्मशाला में बुनियादी ढांचे के विकास और परिवर्तन को उजागर करना।
3. पर्यटन के कारण खान–पान के प्रभाव को समझना।

i;ZVu vkSj LFkkuh; jkstxkj ds chp lEcUèk dk fo’ys"k.k

पर्यटन के आने से यहां स्थानीय रोजगार में काफी बढ़ोतरी हुई है। लोग रेहड़ी लगाकर या दुकान आदि खोल कर अपनी आर्थिक स्थिति को मजबूत कर रहे है जिससे धर्मशाला में आर्थिक विकास काफी मात्रा में हुआ है।

èkeZ’kkyk esa cqfu;knh <kaps ds fodkl vkSj ifjorZu dks mtkxj djuk

धर्मशाला में पर्यटन के आने से हर दिन नए बुनियादी ढांचे का निर्माण कार्य हो रहा है। पिछले दस सालों के मुकाबले अभी काफी मात्रा में नए होटल, रेस्टोरेंट कई अन्य तरह के निर्माण कार्य हुए है जिसका पर्यटन में विशेष महत्व है।

i;ZVu ds dkj.k [kku&iku ds çHkko dks le>uk

पर्यटको के आने से पहले जो धर्मशाला का खान–पान था उसकी अपेक्षा अब काफी मात्रा में परिवर्तन आया है। पर्यटको के आने से अब अलग–अलग प्रकार का भोजन आपको देखने को मिल जायेगा। धर्मशाला के स्थानीय लोगों के खान–पान भी पर्यटन के कारण काफी प्रभावित हुआ है।

vuqlèkku dh dk;Zfofèk

शोध विधि किसी भी शोध का एक महत्वपूर्ण पहलू है किसी भी शोध को करने के लिए शोध विधि का होना बहुत जरूरी होता है। बिना शोध विधि के हम एक अच्छा शोध नही कर सकते है। सामाजिक विज्ञान में शोध विधि महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शोध विधि हमे दो तरह से देखने को मिलती हैः

çkFkfed ’kkèk fofèk

यह वह शोध विधि है जो हम शोध करते है उसको हम क्षेत्र में जाकर, साक्षात्कार, प्रश्नावली आदि से प्राप्त करते है क्योंकि यह स्वयं लोगो से जाकर प्राप्त किया जाता है।

f}rh;d ’kkèk fofèk

यह वह शोध विधि है जिसमे आँकड़े हमे पुस्तक, दस्तावेज, मैगजीन इत्यादि से प्राप्त होती है। यह हमें दुसरे लोगों द्वारा लिखी हुई मिल जाती है।

अध्ययन की गहराई के लिए साक्षात्कार सूची का प्रयोग किया गया जिसमे कि प्रत्याशियों से जानकारी लेने के लिए प्रश्नों का प्रयोग किया गया। साक्षात्कार सूची वह होती है जिसमे कुछ प्रश्नों में साक्षातकर्ता घर से तैयार करके ले जाते है और कुछ वहां की परिस्थिति के अनुसार बनाता है। साक्षात्कार सूची में दो तरह के प्रश्न होते है बंद प्रश्न और खुले प्रश्न बनाये जाते है। खुले प्रश्न वह होते है जिसकी कोई सरंचना होती है जिसमे उत्तरदाता

अपने शब्दों में उतर देता है बंद प्रश्न वह होते है जिसकी पूर्ण संरचना बनाई गयी होती है। इसमे अनुसंधानकर्ता द्वारा उत्तर के कुछ विकल्प दिए जाते है जिसमे उत्तरदाता को किसी एक को चुनना होता है।

इस अध्ययन में प्रतिदर्श का प्रयोग किया गया है। प्रतिदर्श का अर्थ होता है अध्ययन के लिए जनसँख्या में से कुछ अंश लिया जाता है तो उसे प्रतिदर्श कहा जाता है। इस अध्ययन में 50 लोगो को प्रतिदर्श बनाया है जिसमे यादृच्छिक विधि प्रतिदर्श को प्रयोग में लाया गया जिसमे अनुसंधानकर्ता अपनी सुविधा से प्रत्याशियो को चुनते है।

हेनरी मेनहम के अनुसार, "एक प्रतिदर्श समग्र जन का अंश होता है जिसका अध्ययन समग्रजन के विषय में अनुमान निकालने के लिए किया जाता है।"

vkdMk dk fo'ys"k.k

lkfj.kh 1% लिंग के आधार पर प्रत्याशियों का विभाजन

क्रम संख्या	लिंग	प्रत्याशी	प्रतिशत
1	महिलाएँ	19	38
2	पुरुष	31	62
	कुल	50	100

(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)

इस शोध पत्र में 50 लोगो को प्रतिदर्शन बनाया है जिसमें कि 31 पुरुष और 19 महिलाएँ है।

lkj.kh 2% आयु के आधार पर प्रत्याशियों का विभाजन

क्र.सं.	आयु	महिलाएँ	पुरुष	कुल	प्रतिशत
1	20–25	5	8	13	26
2	25–30	4	8	12	24
3	30–35	3	10	13	26
4	35–40	7	5	12	24
	कुल	19	31	50	100

(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)

सारणी 2 दर्शाती है की शोध के समय 50 प्रत्याशियों के प्रतिदर्शन में भिन्न–भिन्न आयु के वर्गो की महिलाओं तथा पुरुषों का अध्ययन किया जिसमे सारणी के आधार पर उनका विभाजन किया। इसमे 20–25 वर्ष के आयु वर्ग में 5 महिलायें और 8 पुरुष है। 25–30 के आयु वर्ग में 4 महिला और 8 पुरुषों को प्रतिदर्शन बनाया। 30–35 में 3 महिलायें है यहाँ पुरुषों की संख्या 10 है। 35–40 में 7 महिला और 5 पुरुषों को अपने शोध पत्र में शामिल किया।

lkj.kh 3% पर्यटन और स्थानीय रोजगार के बीच सम्बन्ध का विश्लेषण

क्रम संख्या	उत्तर	प्रत्याशियों की संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	45	90
2	ना	05	10
	कुल	50	100

(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)

90 प्रतिशत उतरदाताओं ने अपने जबाव में बताया कि पर्यटन के आने से यहां स्थानीय रोजगार में काफी बढ़ोतरी हुई है। लोग रेहड़ी लगाकर या दुकान इत्यादि खोल कर अपनी आर्थिक स्थिति को मजबूत कर रहे है, जिससे धर्मशाला के आर्थिक विकास में अत्यधिक वृद्धि हुई है।

lkj.kh 4% धर्मशाला में बुनियादी ढांचे के विकास और परिवर्तन को उजागर करना

क्रम संख्या	उत्तर	प्रत्याशियों की संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	40	80
2	ना	10	20
	कुल	50	100

(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)

80 प्रतिशत उतरदाताओं ने अपने जबाव में बताया धर्मशाला में पर्यटको के आने से हर दिन नए बुनियादी ढांचे का निर्माण कार्य हो रहा है, जबकि 20 प्रतिशत लोगों ने कहा कि बहुत कम परिवर्तन हुआ है। पिछले दस सालों के मुकाबले अभी काफी मात्रा में नए होटल, रेस्टोरेंट कई अन्य तरह के निर्माण कार्य हुए है जिसमें पर्यटन का विशेष महत्व है।

lkj.kh 5% पर्यटन के कारण खान–पान के प्रभाव को समझना

क्रम संख्या	उत्तर	प्रत्याशियों की संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	50	100
2	ना	00	000
	कुल	50	100

(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)

100 प्रतिशत उतरदाताओं ने अपने जबाव में बताया पर्यटन के आने से पहले धर्मशाला का जो खान–पान था उसकी अपेक्षा अब काफी मात्रा में परिवर्तन आया है। पर्यटको के आने से अब अलग–अलग प्रकार का भोजन आपको देखने को मिल जायेगा। धर्मशाला के स्थानीय लोगों के खान–पान पर्यटन के कारण काफी प्रभावित हुआ है।

fu"d"kZ

उपरोक्त अध्ययन में हम देखे तो धर्मशाला के आर्थिक विकास में पर्यटन की अत्याधिक भूमिका हमें देखने को मिलती है। पर्यटको के आने से वहां के लोगों में रोजगार में वृद्धि हुई है और वहां के बुनियादी ढांचे में भी काफी सुधार हुआ है। वैश्वीकरण के कारण वहां के लोगों के खान–पान में भी काफी परिवर्तन हुआ है, यह सब पर्यटन के कारण हुआ है। पर्यटन ने धर्मशाला के विकास में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

lanHkZ lwph

1. भगेल, अर्जुन सिंह, "भारतीय अर्थव्यवस्था में पर्यटन की भूमिका का विश्लेषणात्मक अधययन", *In Journal ofAdvancesAnd scholarly Researches inAllied Education.*
2. Kothari, C R. (2019). "Research Methodology, Method and Techniques", Fourth Edition, Delhi, New Age International (P) Ltd., Publishers
3. आहूजा, राम. (2010). *"सामाजिक अनुसन्धान"* जयपुर, रावत पब्लिकेशनस.
4. Bhatia, A.K., (2011). *"Tourism Development: Principles and Practices"*, Third Revised Edition, New Delhi, Sterling Publishers Private Limited.
5. Kamra K. Krishan and Chand Mohinder, (2010), "Basic of Tourism: Theory, Operation and Practise", New Delhi, Kanishka Publishers Distributors.
6. Telfer, J. David and Sharpley Richard, (2016). "Tourism and development in the developing world, Second Edition, New York CPI Group (UK) Ltd.
7. https://tourismnotes.com/traveltoursm
8. https://hiom,wikepedia.org.wiki/पर्यटन
9. हिमाचल प्रदेश टूरिस्ट रोड एटलस, डॉ आर पी आर्य,डॉ. गायत्री आर्य, अंशुमान आर्य, जितेंदर आर्य.
10. http://hi.m.wikipedia.org/wiki/

––==00==––